

श्री बृजलाल वर्मा]

ट्रक डायलिंग) टेलीफोन सेवा दिन में कुछ समय के लिये उपलब्ध है। सितम्बर 1977 के अंत तक समूचे ब्रिटेन के लिये यह सेवा चौबीसो घंटे मिलने लगेगी। आशा है कि मार्च 1978 तक ऐसी सेवा समुक्त राज्य अमरीका के न्यूयार्क और वाशिंगटन नगरों के लिये भी चालू हो जायेगी।

मेरे मन्त्रालय के अधीन जो दूर संचार उपकरण का निर्माण करने वाली एनिटे अर्थात् इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्रीज, हिन्दुस्तान टेलीप्रिंटस लिमिटेड और डाक तार कारखाने हैं, उन की वर्तमान उत्पादन क्षमताओं का मैं इस दृष्टि से पुनरीक्षण कर रहा हूँ कि उन की उत्पादन क्षमता इतनी बढ़ जाये कि वे देश की सभी आवश्यकताये पूरी कर सकें। मेरा यह प्रयत्न होगा कि अगले तीन चार वर्षों में दूरसंचार के उच्च कोटि के साज सामानों के उत्पादन में देश आत्मनिर्भर हो जाये।

जब से मैंने संचार मंत्री का कार्यभार सम्भाला हूँ, विभाग के अधिकारियों कर्मचारियों और उन के सभी के प्रतिनिधियों के साथ मेरा अनिष्ट सम्पर्क होता रहा है। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया है कि वे अधिक कुशल, विश्वसनीय और उच्चकोटि की सेवा प्रदान करने में अपना पूर्ण समर्थन देगे। विभाग के सभी कर्मचारियों के ऐसे बड़े हुए उत्साह और उन के पूर्ण सहयोग को देखते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि निकट भविष्य में हम सभी तरह से बेहतर सेवा प्रदान करने में सफल होंगे।

12 55 hrs.

PERSONAL EXPLANATION BY
MINISTER

स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्री
(श्री राज नारायण) : आदरणीय अध्यक्ष महोदय, बिनाक 4 अगस्त, 1977 को लोक

सभा में किया प्रस्ताव पर दोस्तों समय की उन्नीसवीं मिनट में यह मंत्री एच मेरे विषय व्यक्तिगत, अनर्गल एव असत्य आरोप लगाए थे उस विषय में मैं स्थिति स्पष्ट करना चाहूंगा।

डा० जे० पी० सिंह जो चौधरी साहब के दामाद हैं विलिंग्डन अस्पताल में सर्जन हैं उन्होंने 24 मार्च, 1972 को श्री कटेश्वरनाथ के पेट का आपरेशन किया और उस आपरेशन के दौरान एक बैक्काफ फोर्सेप उन के असाध्य म रह गया जो 28 मार्च, 1972 को निकाल दिया गया। इस घटना के तुरन्त बाद 4 अप्रैल, 1972 को डा० एल० आर० पाठक जो उस समय विलिंग्डन अस्पताल में सर्जरी विभाग के प्रधान थे और डा० डी० बी० बिष्ट जो उस समय अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक थे, दोनों ने इस घटना के लिए डा० जे० पी० सिंह को बिल्कुल दोषी नहीं पाया। बाद में इस घटना के संबंध में लिए गये बयानों के आधार पर तत्कालीन महा-निदेशक ने निम्नलिखित टिप्पणी की :

"Staff Nurse, Kunju Kutty, who relieved staff nurse, B. Abraham, during the course of operation on Shri Kateshwar Nath at 1.35 p.m. has in her statement admitted that the surgeon at the time the operation ended had asked routinely if every count was O.K. and that she answered 'Yes'."

Staff Nurse Kutty is accordingly responsible for having missed to count the number of instrument which were available with her after the operation has ended

I consider that the responsibility for the mishap is of the nurses who assisted the surgeon in the operation."

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि डा० जे० पी० सिंह की इस असावधानी के लिए कोई जिम्मेदारी इन अधिकारियों ने अपनी पहली जांच में नहीं रखी। पत्रावली को देखने से ज्ञात होता है कि इस मामले की जांच के दौरान डा० एल० सी० नाटिया, जूनियर मेडिकल ऑफिसर, विलिंग्डन अस्पताल, कुंजी

कुटी, स्टाफ नर्स, आपरेशन थियेटर, ए० अन्नाहम, सिस्टर इंचार्ज, आपरेशन थियेटर, बी० अन्नाहम, स्टाफ नर्स, आपरेशन थियेटर एवं डा० जे० पी० सिंह, सीनियर सर्जन, बिलिंगडन हस्पताल के बयान लिए गये। चूँकि कुमारी कुंजी कुटी स्टाफ नर्स, आपरेशन थियेटर, ने अपनी जिम्मेदारी को स्वीकार कर लिया था इस आधार पर एवं अन्य साक्ष्यों के आधार पर तत्कालीन महानिदेशक ने उन नर्सों को इस घटना के लिए जिम्मेदार पाया जो आपरेशन थियेटर में सर्जन की मदद कर रही थी। फाइल को देखने से यह पता चलता है कि बाद में बिना किसी अतिरिक्त साक्ष्य के महानिदेशक का यह मत हो गया कि डा० जे० पी० सिंह, जिन्होंने आपरेशन किया था, उनकी जिम्मेदारी भी नर्सों के साथ साथ होती है। यह बात ध्यान रखने की है कि इस घटना के लगभग 4 वर्ष के बाद, आपात-स्थिति के दौरान, जबकि राजनैतिक कार्यकर्ताओं एवं उनके सम्बन्धियों को किसी भी सच्चे या झूठे आरोप पर नुकसान पहुँचाने का सिलसिला चला, तब इस मामले को भी फिर से जोर शोर से उठाया गया और डा० जे० पी० सिंह को, जिनको किसी भी अधिकारी ने घटना की तुरन्त जांच के बाद दोषी नहीं पाया था, 4 वर्ष बाद एकाएक आरोप पत्र दिया गया और उसके बाद उनके खिलाफ बहुत ही तेजी से कार्यवाही शुरू हो गई।

डा० जे० पी० सिंह ने अपने विरुद्ध लगाये गये आरोपों के विषय में एक बहुत विस्तृत प्रत्यावेदन दिया और उनके प्रत्यावेदन की छानबीन के बाद उस समय भी, जबकि कर्मचारियों पर आपात-स्थिति का आतंक छाया हुआ था, कार्यालय ने अपने नोट बिनाक 14-7-76 में डा० जे० पी० सिंह को दोषमुक्त करने का सुझाव दिया। 17-7-76 को उप सचिव ने भी यह राय दी कि इस मामले को समाप्त कर देना चाहिए। 19-7-76 को संयुक्त सचिव ने अपनी

टिप्पणी में लिखा कि वह संविन्न है कि डा० जे० पी० सिंह को ही इस मामले के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है अतः उन्होंने डा० जे० पी० सिंह को केवल मौखिक चेतावनी देने के लिए सुझाव दिया। 21-7-76 को तत्कालीन सचिव ने महानिदेशक की भी राय जाननी चाही। 3-8-76 को डा० गोयल महानिदेशक से जो एक विख्यात सर्जन है संयुक्त सचिव की राय का समर्थन किया उसके दूसरे दिन, अर्थात् 4-8-76 को, तत्कालीन सचिव ने महानिदेशक एवं संयुक्त सचिव की राय का समर्थन किया और यह लिखा कि चेतावनी डा० सिंह की चरित्र पंजिका में न लगाई जाये। किन्तु इसके दूसरे दिन ही तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री डा० कर्ण सिंह ने अपनी सभी संबंधित विभागीय अधिकारियों की राय को न मानते हुए डा० जे० पी० सिंह की चरित्र पंजिका में चेतावनी लिखने का आदेश पारित कर दिया।

13.00 hrs.

डा० सिंह ने उक्त आदेश के विरुद्ध एक अपील जनता सरकार के बनने के पहले ही कर दी थी। इस अपील पर उप-सचिव ने यह मत व्यक्त किया कि डा० सिंह की चरित्र पंजिका में जो चेतावनी रखी गई है, विभाग को उसे हटा देनी चाहिए। इस राय से स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक भी सहमत थे। इन लोगों की राय को देखते हुए और पिछले सुझावों के सदर्भ में सचिव ने भी यह सिफारिश की कि यह चेतावनी इनकी चरित्र पंजिका में न रखी जाये। उन्होंने यह भी लिखा कि डा० जे० पी० सिंह एक कुशल अधिकारी हैं और जो गलती हुई वह उनकी नसिब स्टाफ की लापरवाही के कारण हुई। इन उपर्युक्त कार्यालय टिप्पणी के आधार पर मैंने निम्नलिखित आदेश दिया —

“मैं सचिव की राय से सहमत हूँ, चेतावनी चरित्र पंजिका में न रखी जाये”

[श्री राज नारायण]

इस समय तक मुझे पता भी नहीं था कि श्री जे० पी० सिंह चरण सिंह के रिश्तेदार हैं, न तो जे० पी० से और न श्री० चरण सिंह जी ने मुझ से इस बारे में कुछ कहा था।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि डा० जे० पी० सिंह के विरुद्ध राजनैतिक एवं व्यक्तिगत द्वेषयुक्त कारणों से धन्याय किवा गया जिसका परिमार्जन करना मेरे विभाग का और मेरा कर्तव्य था। श्री उन्नीकृष्णन का इस प्रकार का इनसिजुएशन कि चौधरी साहब के कहने से मैंने यह कार्य बाही की, सर्वथा असत्य है। इस विषय से चौधरी साहब ने मुझ से कभी किसी प्रकार की कोई बातचीत नहीं की बल्कि सत्य तो यह है कि एक सुयोग्य सर्वेज के प्रति जो धन्याय हुआ था मैंने अपने विभाग के सभी अधिकारियों की राय एवं स्वयं भी उसका निराकरण किया। श्रीमन्, श्री उन्नीकृष्णन के भाषण को पढ़ने से यह बात साफ हो जाती है कि उन्होंने तथ्यों का पूरा पता लगाये बिना केवल झूठवाहों के आधार पर मेरे विरुद्ध एवं चौधरी साहब के विरुद्ध अनर्गल, असत्य आत्मक एवं निराधार आरोप लगाये।

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN
(Badaagra): rose—

MR. SPEAKER: I am not allowing any debate.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: I must be allowed to make a statement.

MR. SPEAKER: No, nothing of the sort.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: He has referred to me.

MR. SPEAKER: I am not allowing Shri Unnikrishnan or anybody to speak now and nothing will go on record.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN *

SHRI VAYALAR RAYI (Cherayinkil): On a point of order.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: On a point of order.

MR. SPEAKER: The point of order will go on record.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: Under rule 357 a member may with the permission of the Speaker make a personal explanation although there is no question before the House but no debatable matter may be brought forward and no debate would arise. My contention is that according to the rules he has to submit in advance copy; I have a grievance also that if that is not translated, I cannot follow what he said about me or about other members of the House. What he said is basically debatable matter.

MR. SPEAKER: No.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: That is my contention. Secondly, in between apart from what is contained in his written statement that he had submitted to you in advance, he has been speaking *ex tempore* in between which has gone into the record.

MR. SPEAKER: Whatever such intervention is there, I will expunge it. I have only allowed him a written statement and I had a copy of the statement. In my judgement there was no debatable matter. Therefore, it is not open to question. If he had said anything more than the written statement, it was not permitted and therefore it will go out of the records.

SHRI RAJ NARAIN: According to the rules of the House, a Minister can add to his statement.

MR. SPEAKER: Which rule? . . . (Interruptions)

श्री राजनारायण: श्रीमन्, यहाँ पर हम लोग जवाब देते हैं, जवाब में अगर किसी चीज की कमी रहती है तो स्टाफ के लोग यहाँ बैठे रहते हैं जो फौरन लिखकर भेज देते हैं कि इसके मुताबिक जवाब पढ़ दिया जाये और उसके मुताबिक हम पढ़ देते हैं। हमारा जो स्टेटमेंट है उसको अगर आप

वैलें तो उससे ज्यादा हमारे पास काइल
मे लिखा हुआ है। स्टेटमेंट में जो लिखा
वह धाकके कमरे में लिखा दिया और
उसके प्रतिरिक्त हमने कोई चीज नहीं पढ़ी
है।

इतना जरूर बताया कि "सन् 1972"
इसमें लिखा हुआ है और यह बात फिर
उठाई गई सन् 1976 में, चार वर्ष बाद
—यह भी इसमें लिखा हुआ है। 1976
का पीरियड एमर्जेंसी का पीरियड था,
उस पीरियड में किस तरह से हम लोगों
के रिश्तेदारों को जो सरकार की सविस
में थे, पीनलाइज किया गया है .. बान
करते हो।

श्री एच० सत्यनारायण राव (करीम
नगर) **बोल रहे हैं।

He has used an unparliamentary word.
He was behaving like this in Rajya Sabha
also. He used the words—

**He is a responsible Minister and
he is wrong. We are not going to tolerate
this *****

MR. SPEAKER Please do not record
anything

(Interruptions)%

MR. SPEAKER I shall go through
the record. If there are any unparlia-
mentary words from either side, I
am going to expunge them. There is
no doubt about it. I am also not allowing
anything except the original statement.
I have cleared the original statement.
There is nothing debatable in it. Except-
ing that, I will not allow anything.
Everything else will go out of the record.
No further discussion is allowed.

(Interruptions)%

MR. SPEAKER . Please do not record
anything.

(Interruptions)%

MR. SPEAKER : I am not allowing
any further submissions to be made.
There is no question of any point of order.
In the guise of point of order, every-
body wants to speak on both sides—I
am not referring to one side only—
more especially the senior member.
I am not allowing any point of order.

The Home Minister will now make
a statement.

SHRI VASANT SATHE (Akoli)
Is there any supplementary list of busi-
ness? I do not find anything about the
Home Minister making a statement
in the list of business.

MR. SPEAKER The Home Minister
wrote to me this morning that he wants
to make a statement about (1) Intro-
duction of Police Commissioner system
in Delhi and (2) Publication of a photostat
copy of a MISA warrant dated 26th June
1975 issued by the then Deputy Com-
missioner of Delhi. I have allowed
him to make the statements.

13 16 hrs.

STATEMENT RE INTRODUCTION OF POLICE COMMISSIONER SYSTEM IN DELHI

THE MINISTER OF HOME
AFFAIRS (SHRI CHARAN SINGH)
Sir, The Police in Delhi have been
governed by the provisions of the Indian
Police Act of 1861, which provides for the
general superintendence and control of
the District Magistrate over the working
of the police. The question of introduc-
ing the Police Commissioner system
in Delhi has been under consideration
of Government for the last 20 years ever
since the Estimates Committee made a
recommendation to this effect. Sub-
sequently, the Delhi Police Commission
also known as the Khosla Commission
in its report submitted in 1968 also re-
commended the introduction of this
system in Delhi.

2 The advantages and disadvantages
of a change-over to the Police Com-
missioner system had been considered
in depth from time to time. It is no
doubt true that not only the quality of the
personnel but also the system under which
they functioned, would be decisive in
determining efficiency and performance.
The earlier thinking, therefore, was that
the balance of advantage would be in
favour of a change-over. During the
Emergency, however, a decision was taken

**Expunged as ordered by the Chair.
%Not recorded.